इकाई 26 नागार्जुन

इकाई की रूपरेखा

26.0 उद्देश्य
26.1 प्रस्तावना
26.2 पृष्ठभूमि
26.3 जीवन परिचय एवं कृतित्व
26.4 नागार्जुन के काव्य की अन्तर्वस्तु
  26.4.1 सामंती व्यवस्था के खिलाफ
  26.4.2 जीवन की विसंगतियों और अंतर्विरोधों का चित्रण
  26.4.3 राजनीतिक व्यंग्य की कविताएँ
  26.4.4 निजी जीवन प्रसंगों पर लिखी कविताएँ
  26.4.5 प्रकृति-चित्रण
26.5 संरचना शिल्प
  काव्य रूप, काव्य भाषा
26.6 काव्य वाचन और संदर्भ सहित व्याख्या
26.7 सारांश
26.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें
26.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

26.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप:

- प्रगतिशील कवि नागार्जुन के युग की पृष्ठभूमि एवं उनके जीवन और कृतित्व के बारे में जान सकेंगे,
- नागार्जुन की विषयगत काव्य विशेषताओं के बारे में बता सकेंगे,
- नागार्जुन की कविता की व्याख्या कर सकेंगे, और
- उनकी कविताओं की शिल्पगत विशेषताओं को जान सकेंगे।

26.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई में आपने प्रगतिशील कवि केदारनाथ अग्रवाल के बारे में अध्ययन किया था। इस इकाई में आप एक और प्रगतिशील कवि नागार्जुन के बारे में अध्ययन करेंगे। सबसे पहले हम नागार्जुन की युगीन पृष्ठभूमि को देखेंगे। नागार्जुन की युगीन पृष्ठभूमि भी वही रही है, जो केदारनाथ अग्रवाल की रही है। नागार्जुन भी आजादी से पूर्व से लेकर आज तक रचना कर्म में संलग्न हैं। इसके बाद आप नागार्जुन के जीवन परिचय और कृतित्व की जानकारी हासिल करेंगे। नागार्जुन का जीवन बहुत वैविध्यपूर्ण रहा है। यायावरी और फक्कड़पन उनके जीवन और व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताएँ हैं। नागार्जुन ने लगभग सारा देश घूमा है, देश और जनता को बहुत करीब से जाना है। गरीब परिवार में पैदा होकर नागार्जुन ने गरीबी को, अभावों को, जीवन की कठिनाइयों को स्वयं झेला है।

अन्तर्वस्तु में आप नागार्जुन की काव्य विशेषताओं के बारे में पढ़ेंगे। नागार्जुन के काव्य की अन्तर्वस्तु का दायरा बहुत बड़ा है। उन्होंने अपने कवि जीवन के लगभग पचास वर्षों में हजार के आसपास कविताएँ लिखी हैं। अरुण कमल उन के काव्य की अन्तर्वस्तु के बारे में लिखते हैं – "एक-एक कतरे को एक-एक कविता को जोड़ने से जो नक्शा बनता है, वह इतना विस्तृत, इतना जन संकुल है कि किसी एक बिंब या सूत्र में उनके काव्य लोक को व्यक्त नहीं किया जा सकता। यह हजार-हजार बाहों वाली कविताएँ हैं, हजार दिशाओं को इंगित करती, हजार वस्तुओं को अपनी मुट्ठियों में थामे।' वास्तव में नागार्जुन की काव्य भूमि इतनी व्यापक है कि उसे खंड-खंड करके देख पाना संभव नहीं है। नागार्जुन का काव्य संसार 'मिथिला के रुचिर भूभाग से लेकर मुलुण्ड के अति सुदूर प्रदेश तक फैली हुई काव्य

भूमि, बिहार के सामंती उत्पीड़न से लेकर अमरीकी साम्राज्यवाद तक की शोषण-शृंखला, भूमिहीन मजदूरों के दुर्दम संघर्ष से लेकर जूलियन रोजनबर्ग की महान संघर्ष गाथा और नितांत व्यक्तिगत जीवन-प्रसंगों से प्राप्त सुख-दुःख से लेकर बाकी सारे जगत के सुख-दुःख मोतिया नेवले और मधुमती गाय तक के, यह चौहद्दी है नागार्जुन के काव्य-महादेश की।" (अरुण कमल, आलोचना, अंक 56-57, पृष्ठ 27)।

संक्षेप में नागार्जुन की कविताओं का हम राजनीतिक व्यंग्य की कविताएँ, सामंती व्यवस्था के उत्पीड़न के खिलाफ लिखी गयी कविताएँ और मानवीय, निजी संबंध और प्रकृति संबंधी कविताएँ शीर्षकों के अन्तर्गत अध्ययन करेंगे।

संरचना शिल्प के अन्तर्गत आप नागार्जुन के काव्य शिल्प, काव्य भाषा के बारे में पढ़ेंगे। नागार्जुन जैसे विषय-वस्तु के संदर्भ में वैविध्यपूर्ण हैं, वैसे ही शिल्प और भाषा के संदर्भ में भी हैं। उनके बात करने के हजार ढंग हैं। जितने मुँह, उतनी बोली। कभी तो वे निपट पारंपरिक छंद में लिखते हैं तो कभी शुद्ध 'गद्य कविता' लिखते हैं। छंदों के अनेक प्रकार हैं, एक ही छंद की अनेक लयें हैं। एक ही कविता में बार-बार छंद बदल सकता है इसी तरह उनकी भाषा के भी अनेक तेवर हैं।

आइये, नागार्जुन की युगीन पृष्ठभूमि देखें।

26.2 पृष्ठभूमि

पिछली इकाई में हमने प्रगतिशील कवि केदारनाथ अग्रवाल को प्राप्त जिस राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक पृष्ठभूमि की विस्तार से चर्चा की थी – लगभग वही पृष्ठभूमि नागार्जुन की भी है। वैसे भी ये दोनों कवि हमउम्र हैं, दोनों के सरोकार एक हैं, दोनों कवि भारत की शोषित, पीड़ित और अत्याचार सहती जनता के पक्षधर हैं – दोनों कवि अपने युग, इतिहास को प्रगतिशील चेतना से संस्कारित रचना दृष्टि से अभिव्यक्ति दे रहे हैं। इसलिए हम यहाँ दुबारा उस पृष्ठभूमि की विस्तार से चर्चा नहीं करेंगे। किन्तु इतना आप ध्यान में रखें कि पृष्ठभूमि एक ही होते हुए भी, प्रत्येक कवि अपने समय को, अपने विवेक, अपनी चेतना, अपनी दृष्टि से देखता है। प्रत्येक कवि की रचना-प्रक्रिया भिन्न होती है। नागार्जुन ने अपने युग, अपने समाज को अपनी दृष्टि से देखा है – अपने ढंग से परखा और अभिव्यक्त किया है। यहीं पर प्रत्येक कवि दूसरे कवि से भिन्न और विशिष्ट होता है।

26.3 जीवन परिचय एवं कृतित्व

'बाबा' नाम से पुकारे जाने वाले प्रगतिशील जनकवि नागार्जुन (मूल नाम श्री वैद्यनाथ मिश्र) का जन्म कब हुआ उन्हें भी ठीक से नहीं मालूम। 1911 की जून में वे किसी दिन पैदा हुए ऐसा मान लिया जाता है। माँ का देहांत बचपन में ही हो गया, पिता की कई संताने नहीं बचीं। वैद्यनाथ की मान्यता से ये अकेले बचे। नागार्जुन मैथिली ब्राह्मणों के संस्कृत पंडित घराने से हैं। परदादा, पिता सब खेती करते थे, बिहार के दरभंगा प्रांत में। नागार्जुन की प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही संस्कृत पाठशाला में हुई। फिर काशी और कलकत्ता में संस्कृत का अध्ययन किया। काशी में रहते हुए ही नागार्जुन ने अवधी, ब्रज, खड़ी बोली का भी अध्ययन किया, मैथिली में वैदेह उपनाम से लिखना भी शुरू कर दिया। पहली बार 1930 में मैथिली में पहली कविता छपी, इसी दौरान 1932 में नागार्जुन का अपराजिता से विवाह हो गया।

घूमने और इधर-उधर भटकने की आदत नागार्जुन को बचपन से ही पड़ गयी थी, सो वे बड़े होकर बहुत घूमे – 1934 से 1941 तक लगभग घुमंतू जीवन ही रहा, इस बीच देशाटन किया। लंका गये, बौद्ध धर्म में शिक्षा-दीक्षा ली और बौद्ध ग्रन्थों का अध्ययन किया। 'नागार्जुन' नाम यहीं धारण किया सन् 1936 में। काम चलाऊ अंग्रेज़ी और पालि भाषा भी यहीं सीखी। 1938 में भारत वापिस आए। बिहार में चल रहे किसान आन्दोलन में शिरकत की। तीन बार जेल गये, जेल से छूट कर 1941 में फिर गृहस्थ बने। उन्हें गाँव में रहने के लिए बाध्य किया गया। पड़ोस के शहर मधुबनी, दरभंगा तक उन्हें जाने की इजाज़त नहीं थी कि कहीं फिर वे भाग न जाएँ। समाज में सब लोग उन्हें पत्नी त्याग, बौद्ध धर्म में दीक्षित

होने और पुनः गृहस्थाश्रम में लौटने पर लांछन लगाते, उनकी कटु आलोचना करते और दूसरी ओर खुफिया पुलिस की निगाह भी उन पर हमेशा लगी रहती।

इसी बीच नागार्जुन ने मैथिली में आठ-आठ पृष्ठों की छोटी-छोटी कविता पुस्तक लिख कर ट्रेन में खुद ही बेचनी शुरू की। जनता क्या चाहती है – यह ठीक से नागार्जुन ने ऐसे ही पहचाना। संस्कृत, पालि, मैथिली में पांडित्य हासिल करने के बाद उन्होंने खुद को जनता से जोड़ लिया। मौखिक परंपरा से भाषा कैसे संस्कारित होती है, यह जाना।

जीविका के लिए पत्नी को लेकर वे फिर पंजाब पहुँचे। 1943 में पिता का स्वर्गवास हो गया तब गाँव में घर का सारा उत्तरदायित्व पत्नी ने अपने कंधों पर ले लिया। नागार्जुन घुमक्कड़ी करते रहे और साहित्य जीवी बन गए। तीन-तीन साल में एक बार गाँव गये, नहीं गये किन्तु घर की जिम्मेवारियों के विषय में हमेशा चिंतित रहे।

कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्यता भी धारण की किन्तु 1962 में चीनी आक्रमण के बाद सदस्यता छोड़ दी। वे कट्टर मार्क्सवादी नहीं हैं, राजनीतिक अर्थ में तो नहीं किन्तु उनकी प्रतिबद्धता बहुत स्पष्ट है। वे शोषित, पीड़ित जनता के खुले पक्षधर हैं। बिहार के जयप्रकाश नारायण के आंदोलन में उन्हें फिर जेल हुई।

"नागार्जुन" आज भी वही घुंमतु जीवन जी रहे हैं, जहाँ भी उत्पीड़न होता है, जनता का प्यार मिलता है वे तुरंत वहाँ पहुँच जाते हैं। 79 वर्ष की आयु हो जाने पर भी वे साहित्य सृजन और घुमक्कड़ी में व्यस्त हैं।

कृतित्व

नागार्जुन ने मैथिली, संस्कृत और हिन्दी में काव्य रचना के अलावा उपन्यास,कहानी, निबंध भी लिखे हैं और कुछ अनुवाद भी किए हैं। उनकी प्रकाशित काव्य रचनाएँ निम्नलिखित हैं।

बढ़वर	(मैथिली 1941)
विलाप	(मैथिली 1941)
शपथ	(हिन्दी 1948)
चित्रा	(मैथिली 1949)
चना ज़ोर गर्म	(हिन्दी 1952)
युगधारा	(हिन्दी 1953)
खून और शोले	(हिन्दी 1955)
प्रेत का बयान	(हिन्दी 1957)
सतरंगे पंखों वाली	(हिन्दी 1957)
प्यासी पथराई आंखें	(हिन्दी 1962)
पत्रहीन नग्न गाछ	(मैथिली 1967)
अब तो बंद करो हे देवी	(हिन्दी 1971)
तालाब की मछलियाँ	(हिन्दी 1974)
चंदना	(हिन्दी 1976)
तुमने कहा था	(हिन्दी 1980)
हजार-हजार बाहों वाली	(हिन्दी 1981)
पुरानी जूतियों का कोरस	(हिन्दी 1983)
रत्न गर्भ	(हिन्दी 1984)
ऐसे भी हम क्या, ऐसे भी तुम क्या	(हिन्दी 1985)
आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने	(हिन्दी 1986)

उपन्यास: रतिनाथ की चाची (1984), बलचनमा (1952), वरुण के बेटे (1954), बाबा बटेसर नाथ (1954), दुखमोचन, इमरितिया, उग्रतारा, जमनिया के बाबा, कुंभीपाक (1970), अभिनंदन (1970), नई पौध, पारो मैथिली एवं हिन्दी दोनों में (1970).

कहानी संग्रह: आसमान में चंदा तेरे (1982).
निबंध संग्रह: अन्नहीनम्, क्रियाहीनम् (1983).
अनुवाद: मेघदूत, गीत गोविंद,विद्यापति की पदावली।

इन ग्रंथों के अलावा नागार्जुन की ढेरों कविताएँ यहाँ-वहाँ पत्र-पत्रिकाओं में बिखरी पड़ी हैं, जिनका संकलन होना अभी बाकी है।

नागार्जुन के काव्य का रचनाकाल लगभग पचास वर्षों में फैला हुआ है। इनकी लिखी कविताओं में मुख्य रूप से इस देश की शोषित-पीड़ित जनता के संघर्षों की तमाम-तमाम कथाएँ उनके सुख-दुःख, सत्ता वर्ग के लोलुप भ्रष्टाचारी चेहरों की नंगी सूरतें, भ्रष्ट राजनेताओं पर तीखी टिप्पणियाँ विभिन्न काव्यशैलियों व रूपों में अभिव्यक्त हुई हैं। इसके अलावा प्रेम, प्रकृति जैसे काव्य के शाश्वत माने जाने वाले विषयों पर भी नागार्जुन ने लिखा है। अपने प्रिय मित्रों, अग्रजों और देश-विदेश की कई महान विभूतियों पर भी नागार्जुन ने कविताएँ लिखी हैं। कुल मिला कर इनका कृतित्व इस उपमहाद्वीप की तमाम-तमाम जनता के सरोकारों का महाकाव्य है। वास्तव में वे जनकवि हैं। उन्होंने अपने बारे में खुद भी कहा है – जनकवि हूँ मैं/साफ कहूँगा, क्यों हकलाऊँ।

26.4 नागार्जुन के काव्य की अन्तर्वस्तु

जनकवि नागार्जुन के काव्य की अन्तर्वस्तु का दायरा बहुत बड़ा है। भारतीय जनजीवन में आजादी से पहले से लेकर आज तक जो कुछ भी घटा है – वह सब नागार्जुन की कविता में कैद है। सैकड़ों बर्बर गोलीकांड, शोषण, हिंसा, राजनीतिक भ्रष्टाचार, सामाजिक दुराचार्य – सब नागार्जुन की वर्गचेतन दृष्टि का निशाना बने हैं। एक ओर तो उन्होंने ऐसी राजनीतिक कविताएँ लिखी हैं जिन्हें तात्कालिक घटना पर आधारित कविताएँ कहा जा सकता है। दूसरी ओर संघर्षशील मनुष्य की सुख-दुःख गाथा पर अपेक्षतया गंभीर कविताएँ हैं, उन्होंने प्रकृति पर, प्रेम पर भी खूब लिखा है। नागार्जुन की राजनीतिक कविताओं में और सामंतों, पूँजीपतियों और भ्रष्ट बुद्धिजीवियों पर लिखी हुई कविताओं में व्यंग्य की जो पैनी मार है – वे उन्हें अग्रज व्यंग्यकारों की श्रेणी में ला खड़ा करती हैं – नागार्जुन ने व्यक्तियों, साहित्यकारों, राजनीतिज्ञों पर भी कविताएँ लिखी हैं।

यहाँ हम नागार्जुन की विभिन्न विषयों पर लिखी हुई कविताओं का जायजा लेंगे।

26.4.1 सामंती व्यवस्था के खिलाफ

आजादी से पूर्व भारत में लगभग पतनशील सामाजिक ढाँचा था जो नयी शिक्षा-दीक्षा और ज्ञान-विज्ञान की आग से झुलस कर टूट रहा था। फिर भी बड़े-बड़े सामंत, जमींदार, किसानों, मजदूरों का निरंतर खून चूस रहे थे और राष्ट्रीय आंदोलन के बावजूद किसी तरह अपनी सत्ता बनाए रखने का प्रयास कर रहे थे, इसमें उन्हें अंग्रेज़ों से भी बराबर मदद मिलती थी।

नागार्जुन ने सामंती व्यवस्था के उत्पीड़न, वैभव प्रदर्शन और पतन को अभिव्यक्त करने वाली कई कविताएँ लिखी हैं। निराला पर लिखी एक कविता में उन्होंने निराला की ही दो पंक्तियाँ उद्धृत की हैं –

खुला भेद विजयी कहाये हुए जो
लहू दूसरों का पिये जा रहे हैं

यही दो पंक्तियाँ नागार्जुन काव्य की भावात्मक नींव हैं। पूरा नागार्जुन काव्य 'विजयी कहाये हुओं' का भेद खोलता है। नागार्जुन की ऐतिहासिक चेतना और दृष्टि बहुत स्पष्ट और खरी है, जब-जब भी और जहाँ कहीं भी जनता का शोषण होता है, जनता पर अत्याचार होते हैं, नागार्जुन उसकी खिलाफत ही नहीं करते, अपना पक्ष जनता के साथ जाहिर करते हैं।

उनकी एक कविता है 'विजयी के वंशधर', यह कविता पूरी गहराई के साथ सामंती समाज के वैभव प्रदर्शन और उत्पीड़न को अभिव्यक्त करती है, विजयादशमी के दिन का वर्णन है। आज बाबू-बबुआन की जययात्रा निकली है। तेल से पोसी हुई लाठियाँ, जिन्हें लठैत थामे हैं। नीलकण्ठ का दर्शन आज के दिन शुभ माना जाता है, इसलिये बहेलिये नीलकण्ठ को पिंजरे में लाये हैं। राजा राम के वंशज यानि सामंत आज सजधज कर निकलेंगे और पीछे-पीछे रैयत यानि किसान-मज़दूर चलेंगे, अर्थात् वानरी सेना। नागार्जुन वर्णन करते हैं –

गुलाबी धोती
सीप की बटनों वाला रेशमी कुर्ता
मलमल की दुपलिया, फूलदार टोपी,
बाटा के पम्प शू

नेवले के मुँह सी मूठ की नफीस छड़ी
बड़ा और छोटा सरकार
लाल साहेब, हीराजी,
मानिक जी, मोती साहेब
बुच्चन जी, बबुअन जी
नून जी, बचोल बाबू
हवेली से निकले बनकर सँवर कर।

ये हैं जमींदार। इनकी वेशभूषा का एक-एक ब्यौरा सामंती व्यवस्था को खोल कर रख देता है। गुलाबी, शुभ मानी जाने वाली धोती, सीप के बटनों वाला कुर्ता, नफीस घड़ी। ये बबुअन जो लाठी तक नहीं उठा सकते, आज रावण को मारेंगे, इस तरह नागार्जुन सामंतों की वास्तविक शक्तिहीनता, आडंबर और खोखलेपन को दिखाते हैं। वास्तव में नागार्जुन की यह कविता सामंती व्यवस्था और उसके इतिहास का पूर्ण आकलन करती है।

नागार्जुन की एक और कविता है – 'तालाब की मछलियाँ', जिसके माध्यम से वे नारी की दासता का बहुत ही मार्मिक वर्णन करते हुए सामंती व्यवस्था की सड़ांध भरी सच्चाईयों का पर्दाफाश करते हैं। कोसी की बाढ़ ने पोखर का मिण्डा तोड़ दिया है और पोखर का पानी कोसी के पानी में मिला जा रहा है। मिथिलावासी पोखर की मछलियों पर टूट पड़े हैं। अचानक बाँध टूटने से ये मछलियाँ कोसी के विराट जल में व्याकुल हो गयी हैं। इस आकस्मिक मुक्ति से वे हतप्रभ हैं, अपनी स्वाभाविक गति ही भूल गयी हैं।

इसके बाद नागार्जुन पोखर का पूरा इतिहास बताते हैं। फिर मछलियाँ जमींदार के अन्तःपुर में पहुँचती हैं। वे अधेड़ मथुरा पाठक की हवेली में पहुँचती हैं जहाँ पाठक की अठारह वर्षीय तीसरी पत्नी उन्हें तलने बैठती है। यहाँ दृश्य बदलता है। कड़ाही में तल रही मछलियाँ पाठक जी की पत्नी से कहती हैं –

हम भी मछली, तुम भी मछली
दोनों ही उपभोग वस्तु हैं

इसके बाद नारी की दासता का पूरा इतिहास है। मछलियाँ मुक्त हो गयीं किन्तु नारी अभी भी गुलाम है। मछलियाँ कहती हैं –

बहुत दिनों पर
पाई हमने छूट
मचने दो यदि मची हुई है हत्या अथवा लूट
वन्या के प्लावन से सहसा पुष्करिणी की
परिधि गयी है टूट

यह सक्रांति का समय है। मुक्ति से ठीक पहले की उथल-पुथल है। इसी तरह नागार्जुन सामंती व्यवस्था का अपनी कविता में भेद खोलते हैं।

26.4.2 जीवन की विसंगतियों और अन्तर्विरोधों का चित्रण

नागार्जुन ने यदि जीवन की ठोस विसंगतियों का सीधा सच्चा चित्रण किया है तो दूसरी ओर जीवन के अन्तर्विरोधों को भी अभिव्यक्ति दी है। उनकी एक कविता है – 'शालवनों के निविड टापू में', इसमें एक प्रसंग है, एक आदिवासी से दियासलाई मांगने का, यह प्रसंग, एक साधारण सी घटना हमारे राजनीतिक और सामाजिक जीवन के अनेक अन्तर्विरोधों को खोलती हैं। इसमें दो शब्द आते हैं – राजा और शबरपुत्र। दोनों शब्द हमें इतिहास में राजतंत्र के युग में ले जाते हैं। यह आदिवासी लोकनृत्य पेश करने दिल्ली गया था। नागार्जुन उससे दिल्ली के राजा का नाम पूछते हैं? उसे नहीं मालूम। उसे यह भी नहीं मालूम वो दिल्ली क्यों गया था। उसकी इस स्थिति का जिम्मेवार कौन है? इसके बाद कवि इस आदिवासी के साथ कुछ दिन रहने की इच्छा प्रकट करता है ताकि इसके बारे में कुछ जान सके किन्तु वह इतनी देर में 'जा चुका था गहरे निविड़ अरण्य की अतल झील के अंदर' इस पंक्ति का एक-एक शब्द उसे इस समाज से उसकी दूरी, अजनबीपन का तीव्र एहसास करा देता है और कवि इसी दुनिया में रह जाता है –

'स्टार्ट हुई हमारी जीप
बेलाडीला वाली उस सड़क पर
दन्तेवाड़ा से 55 किलोमीटर आगे'

नागार्जुन की एक दूसरी कविता है – 'नथुने फुला-फुला के', जीवन में जो कुछ सुंदर है, और जिसका निरंतर व्यवसायीकरण होता जा रहा है, यह कविता उस की भर्त्सना करती है।

चलते-चलते अचानक कवि के मित्र उसे बाँह से पकड़ लेते हैं और बताते हैं कि यहाँ मुलुण्ड में किसी मराठी व्यवसायी ने इत्र का कारखाना खोला है, जिससे शाम के वक्त बीसियों किलोमीटर इत्र की सुगंध से नहा उठते हैं। कवि के यह मित्र उस सुगंध से आनंदित हैं लेकिन कवि को बिल्कुल निस्पंद देख कर विस्मित रह जाते हैं। फिर उनसे कहते हैं:

'आप की गंध चेतना ठस तो नहीं हुई
अभी तो सत्तर के न हुए होंगे आप'

यह एक साधारण प्रसंग है। वातावरण में एक कृत्रिम सुगंध फैली है और अध्यापक जैसे लोग सुगंध से विह्वल हैं, आनंदित हैं किन्तु कवि संज्ञाशून्य हो गया है। उसे चिंता है कि भाव और इन्द्रियबोध के धरातल पर भी हमारा व्यवसायीकरण किया जा रहा है, सच्चा सौंदर्य नष्ट हो रहा है। एक कृत्रिम सौंदर्य की अभिरुचि धीरे-धीरे सभी पर हावी होती जा रही है। नयी पीढ़ी का सांस्कृतिक पतन हो रहा है। कविता की अंतिम पंक्तियाँ बहुत हिकारत से पतनशील बुद्धिजीवी को प्रस्तुत करती हैं –

अपने तई भरपूर सांस खींची
नथुने फुला-फुला के
वो मुअत्तर हवा भर ली अंदर

नथुने फुला-फुला के – ये शब्द भयंकर तिरस्कार और घृणा से भरे हुए हैं। नागार्जुन ने शुरू में और बाद में भी ऐसी कविताएँ लिखीं जो सामाजिक अन्तर्विरोधों और जीवन की विसंगतियों का पर्दाफाश करती हैं किन्तु बाद में उनकी ऐसी कविताओं की संख्या कम होती गयी। पूंजीवाद शोषण आरंभ हुआ, जीवन और जटिल हुआ। बाद की अपनी कविताओं में उन्होंने प्रमुख रूप से राजनीतिक घटनाओं को अपनी कविता का विषय बनाया है।

बोध प्रश्न 1

1) नागार्जुन की किन्ही चार काव्य रचनाओं के नाम बताइये।
.....
.....
.....
.....

2) नागार्जुन ने काव्य के अलावा और साहित्य की किन-किन विधाओं में रचना की है?
.....

3) नागार्जुन ने किस कविता में नारी की दासता का वर्णन किया है?
.....

4) नागार्जुन की राजनीतिक कविताएँ दो प्रकार की हैं, ये दो प्रकार कौन-कौन से हैं?
.....
.....

5) नागार्जुन की राजनीतिक कविताएँ किसी विशेष विचारधारा के आधार पर नहीं बल्कि कामनसेंस पर आधारित हैं। संक्षेप में टिप्पणी कीजिये।
.....
.....
.....
.....
.....

6) नागार्जुन किस राजनीतिक विचारधारा को मानते हैं?
.....

7) 'मेले नाम तेले नाम' काव्य पंक्तियाँ नागार्जुन ने किस देश की जनता के संघर्षों के पक्ष म लिखी हैं?

.....

.....

26.4.3 राजनीतिक व्यंग्य की कविताएँ

नागार्जुन की राजनीतिक व्यंग्य की कविताएँ आज़ाद भारत के राजनीतिक जीवन की लगभग पूर्ण अभिव्यक्ति है अर्थात् आज़ाद भारत के राजनीतिक वातावरण में आज तक जो कुछ भी महत्वपूर्ण घटा है, ये कविताएँ उसका पूरा-पूरा लेखा-जोखा प्रस्तुत करती हैं। यदि कविता वास्तव में समकालीन जीवन में कोई प्रत्यक्ष भूमिका अदा करती है तो नागार्जुन की राजनीतिक कविताओं ने यह काम बखूबी किया है। दूसरी बात यह है कि यदि कविता की कोई तात्कालिक भूमिका होती है तो हिन्दी कविता में उसी तरह की होगी, जिस तरह की भूमिका नागार्जुन की कविता निभाती है। मायकोव्स्की का कहना था कि कविता नाटकघरों और स्टेडियम में गूँजनी चाहिए, रेडियो से लगातार फूटनी चाहिए, अखबारों की सुर्खियाँ बननी चाहिए, पर्चों, पोस्टरों और यहाँ तक कि मिठाई के डब्बों पर मौजूद रहनी चाहिए। नागार्जुन ने हिन्दी कविता को इस योग्य बनाया कि मायकोव्स्की की यह इच्छा वह पूरी कर सके। उन्होंने बार-बार अपने को जनकवि कहा है। उनकी कविता को हजारों लोगों ने जनसभाओं में सुना है, उनकी कई काव्य पंक्तियाँ नारा बन चुकी हैं और सबसे बड़ी बात यह है कि उनकी कविताएँ बहुत आसानी से जनता की जुबान पर चढ़ जाती हैं।

नागार्जुन की राजनीतिक कविताएँ दो प्रकार की हैं – एक सरकार और शोषण तंत्र के तमाम भागीदारों के खिलाफ लिखी गयी कविताएँ और दूसरी मेहनतकश, संघर्षरत जनता और उस के संघर्षों के पक्ष में।

क) **शोषण के खिलाफ:** शोषण तंत्र के खिलाफ लिखी गयीं अपनी राजनीतिक कविताओं में नागार्जुन शोषण समर्थक चरित्रों के लिये अक्सर जानवरों के बिम्बों का प्रयोग करते हैं। वे एक दूसरे से कुर्सी के लिए लड़ते-झगड़ते हैं। नागार्जुन ने शासन के ऐसे जन-प्रतिनिधियों का व्यंग्य चित्र नौटंकी की परिचित धुन और शब्दावली में खींचा है –

स्वेत-स्याम-तरनार अंखियाँ निहार के
सिण्डकेटी प्रभुओं की पग धूर झार के
लौटे हैं दिल्ली से कल टिकट मार के
खिले हैं दांत ज्यूँ अनार के
आये दिन बहार के।

ये जनप्रतिनिधि चापलूसी करते (दुम में बल दो, गालियाँ बकते, वह अंदर से बांस करेंगे, मैं बाहर से बांस करूँगा, अवसरवादी) एक दूसरे का गुह्य अंग सूंघ रहे हैं, गंदगी से घिरे लोग (फैल गया है दिव्य मूत्र का लवण सरोवार) कुत्सित लोग हैं।

नागार्जुन ने शासकों के सभी छल-छद्मों का पर्दाफाश किया है, नेहरू से लेकर इंदिरा गांधी और मोरारजी देसाई तक के छल-छद्मों की इस व्यवस्था में वह सड़न देख चुके हैं। इसलिये बड़े विश्वास के साथ वे घोषणा करते हैं, "ताशों में ही बचेंगे रहेंगे अब तो राजा-रानी।"

नागार्जुन ने राजनीतिक घटनाओं और व्यक्तियों पर इस तरह से लिखा है मानों वे व्यक्ति, व्यक्ति नहीं, कोई जीवन प्रसंग है या घटना है। स्वातंत्रयोत्तर भारत के अनेक नेता उनके काव्य अलबम में अनेक मुद्राओं में मौजूद हैं। न सिर्फ भारतीय नेताओं की, बल्कि उनके विदेशी आकाओं की छवि भी इन्होंने आंकी है – आइजन हावर, जॉन्सन इत्यादि की। टीटो और हुआ और रजनी पामदत्त को भी नहीं छोड़ा। नागार्जुन को जहाँ कहीं भी शक हुआ कि इस नेता की छवि जनता के हक में नहीं जा रही है – वे तुरंत उसके खिलाफ खड़े हो गये।

नागार्जुन की तमाम राजनीतिक कविताएँ किसी विशेष विचारधारा के आधार पर नहीं बल्कि बहुत ही जबरदस्त कॉमनसेंस पर आधारित हैं। ऐसा नहीं है कि वे किसी विचारधारा पर विश्वास नहीं करते – करते हैं – बहुत ही मोटे शब्दों में कहें तो उन्हें मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित प्रगतिशील कवि कहा जा सकता है। किन्तु वे विचारधारा में बद्ध नहीं हैं इसलिये बहुत बार उनकी राजनीतिक दृष्टि साफ नहीं रही है। 'तुम रह जाते दस साल और' कविता में उनकी सहानुभूति ऐसे लोगों के साथ भी है जो घोर प्रतिक्रियावादी हैं।

ख) **जन संघर्ष और जनता के पक्ष में:** नागार्जुन ने बहुत बड़ी संख्या में मेहनतकश लोगों की तबाह जिंदगी और उनके राजनीतिक संघर्षों पर कविताएँ लिखी हैं। जहाँ कहीं भी जनता शोषण, हिंसा का प्रतिकार करती है या संघर्ष में कूदती है, वे पूरे मन से उसे समर्थन देते हैं। चाहे वह सन् 1948 का तेलंगाना विद्रोह हो, नक्सलबादी आंदोलन हो या एमरजेंसी से मुक्त होने के लिये जनता का संघर्ष और छटपटाहट हो। देश में ही नहीं, विदेशी जनता के प्रति भी उनकी सहानुभूति बराबर रही है। जूलियन रोजनबर्ग का संघर्ष, नेपाली जनता का संघर्ष – नागार्जुन इनके साथ रहे हैं – इन्हें अपना समर्थन देते रहे हैं। वियतनामी जनता के संघर्षों का भी नागार्जुन ने साथ दिया। नागार्जुन का यह साधारण सा सिद्धांत रहा है – दुश्मनों के लिये घृणा और दोस्तों से प्यार। जनता उनकी दोस्त है और जनता के शोषक उनके दुश्मन।

नागार्जुन की आशाओं का प्राण केंद्र है जनता, जनता में इतने गहरे विश्वास के कारण ही नागार्जुन सर्वहारा का, शोषण में पिसती हुई जनता की मुक्ति का स्वप्न देखते हैं। उनकी एक कविता है 'वह कौन था'। उसमें वे कहते हैं –

आज बंधन-मोक्ष के त्यौहार का आरंभ होता है
उपद्रव-उत्पात कह कर कुबेरों का वर्ग रोता है

यह कविता सन् 1948 में कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा कई जगह किये गये सशस्त्र विद्रोह का समर्थन करती है –

हे अपरिचित भूमिगत, अज्ञातवासी
निष्कण्टक करो इस कण्टकावृत भूमि को
अपनी परिधि का करो तुम प्रस्तार
हे नवशक्ति!

सन् 1971 में वियतनाम की जनता के संघर्ष में वे अपना पक्ष और अपनी सहानुभूति देते हैं –

सुने इन्हीं के कानों से तुतलाहट में गीले बोल
तीन साल वाले बच्चों के प्यारे बोल, रसीले बोल

"मेले नाम तेले नाम
बिएनाम बिएनाम
मेले नाम तेले नाम
बिएनाम बिएनाम"

मैंने सोचा:
निर्भय होकर शोषण की बुनियादें यह खोदेंगे

मैंने सोचा:
बेबस बूढ़े विप्लवियों का कालिख यह धो देंगे ('रहे गूँजते बड़ी देर तक')

जनता की अदम्य शक्ति में उनका पूरा विश्वास है। जनता कष्ट में है, तबाह है, फिर भी उसका जो चित्र उनमें मिलता है, वह उदात्त है। जनता अपनी पूरी गरिमा के साथ उनके काव्य में मौजूद है। उनकी एक अन्य कविता है – 'शासन की बंदूक' जिसमें सत्ता द्वारा किये जा रहे दमन का आतंक तो है ही किन्तु जनता और जनता के अदम्य साहस की अभिव्यक्ति भी है –

खड़ी हो गयी चाँप कर कंकालों की हूक
नभ में विपुल विराट-सी शासन की बंदूक

उस हिटलरी गुमान पर सभी रहे हैं थूक
जिसमें कानी हो गयी शासन की बंदूक

सत्य स्वयं घायल हुआ, गई अहिंसा की चूक
जहाँ-तहाँ दगने लगी शासन की बंदूक

जली ठूँठ पर बैठ कर गई कोकिला कूक
बाल न बाँका कर सकी शासन की बंदूक

26.4.4 निजी जीवन-प्रसंगों पर लिखी कविताएँ

नागार्जुन ने निजी जीवन प्रसंगो पर भी अनेक कविताएँ लिखी हैं। जैसे 'सिंदूर तिलकित भाल', 'प्रत्यावर्तन' ये दोनों कविताएँ पति-पत्नी संबंधों को लेकर लिखी गयी कविताएँ हैं। पत्नी प्रेम और गृहस्थ जीवन के आंतरिक सौंदर्य की इनमें अद्‌भुत ढंग से अभिव्यक्ति हुई है। वर्षों तक पत्नी और गृहस्थी की चिंता न करने से उत्पन्न घोर ग्लानि और पश्चाताप, घर की याद और स्थिर शांत जीवन की इच्छा इन दोनों कविताओं में पूरी शक्ति से अभिव्यक्त हुई है–

तभी तो तुम याद आती प्राण
हो गया हूँ नहीं पाषाण!
याद आते स्वजन
जिनकी स्नेह से भीगी अमृतमय आँख
स्मृति विहंगम की कभी थकने न देगी पाँख (सिंदूर तिलकित भाल)

आज तेरी गोद में यह शीश रख कर
क्या बताऊँ मैं कि जो विश्राम पाया। (प्रत्यावर्तन)

एक अन्य कविता है 'यह दंतुरित मुस्कान' जो पुत्र-प्रेम की कविता है –

यह दंतुरित मुस्कान
मृतक में भी डाल देगी जान

नागार्जुन को बच्चों और तरूणों से बहुत प्रेम है। 'तरूण' शब्द बार-बार उनकी कविताओं में आता है। वे नौजवानों के लिए सब कुछ करने के लिए तैयार हैं। उन्होंने यहाँ तक लिखा है –

इन निर्बल बाहों का यदि उपहास तुम्हारा
क्षणिक मनोरंजन करता हो
खुश होंगे हम

इससे बढ़ कर प्रेम और त्याग की अभिव्यक्ति दुर्लभ है।

एक कविता है 'क्या अजीब नेचर पाया है'। यह कविता एक युवती की आंतरिक उदासी, अकेलेपन और अकेलेपनें से लड़ने की कोशिश को बहुत ही गहरायी से व्यक्त करती है। 'आओ प्रिय आओ' में मित्र के प्रति प्रेम की उत्कट अभिव्यक्ति हुई है। मित्र से बोलचाल बंद है और नागार्जुन उदास हैं।

26.4.5 प्रकृति चित्रण

नागार्जुन ने बहुत सारी कविताएँ प्रकृति पर, विशेष कर बादलों और वर्षा ऋतु पर लिखी हैं। बादल उन्हें पागल कर देते हैं। बादलों को उन्होंने अनेक रूपों में देखा है। उनकी एक बहुत प्रसिद्ध कविता है – 'बादल को घिरते देखा है' जिसमें हिमालय, हिमालय की घाटी का वर्णन और बादलों के आने और बरसने का स्वाभाविक वर्णन है। यह वर्णन काल्पनिक नहीं है बल्कि अनुभव पर आधारित है।

तुंग हिमालय के कंधों पर
छोटी-बड़ी कई झीले हैं
उनके श्यामल-नील सलिल में
समतल देशों से आ-आ कर
पावस की उमस से आकुल
तिक्त मधुर विसतन्तु खोजते
हँसों को तिरते देखा है
बादल को घिरते देखा है

प्रकृति से नागार्जुन को इतना प्रेम है कि कई बार तो यह प्रेम पूजा की हद तक पहुँच जाता है।

उनकी एक अन्य कविता है – 'सिन्धु नद' जिसमें सिंधु नदी के माध्यम से वे मुक्ति का, विराटता का स्वप्न देखते हैं –

हम पराधीन तुम हो स्वतंत्र
सिखलाते जाओ नया मंत्र
हे हिमगिरि के साकार भाव
डूबे न हमारी भरी नाव

नागार्जुन की प्रकृति संबंधी रचनाओं में प्रकृति अपने सारे रंगों, मुद्राओं के साथ आई है। प्रकृति के साधारण-असाधारण सारे रूप उनके यहाँ हैं, उसका सौंदर्य और उसकी कुरूपता दोनों ही उन्हें प्रिय है, बसंत, शरद और हेमंत ऋत ही नहीं बल्कि ग्रीष्म, शिशिर और पावस मे भी उन्हें उतना ही प्रेम है। पावस तो उन्हें बहुत प्रिय है। उसके कारण आने वाली बाढ़ तथा महमारियों का चित्रण भी वे करते हैं, जनता के कष्ट मे व्यथित भी होते हैं, परन्तु पावस के प्रति उनकी ममता कम नहीं होती।

26.5 संरचना शिल्प

नागार्जुन की कविताओं की संरचना और शिल्प बहुत वैविध्यपूर्ण है। वे अपनी कविताओं में और कभी-कभी एक ही कविता में इतने छंद, इतने ढंग और इतनी शैलियों का इस्तेमाल करते हैं कि यह जानना कठिन हो जाता है कि उनके शिल्प की केन्द्रीय प्रकृति कौन सी है। व्यंग्य की तेज धार उनकी राजनीतिक कविताओं के शिल्प की प्रमुख विशेषता है। नामवर सिंह नागार्जुन के व्यंग्य को देख कर उन्हें कबीर के बाद हिन्दी का सबसे बड़ा व्यंग्यकार मानते हैं। अपनी एक कविता में नागार्जुन स्वयं भी कहते हैं 'हमने कबीर का पद ही तो धोखा है।' नागार्जुन के व्यंग्य के विषय ही नहीं काव्य रूप भी विविध हैं। जैसे लोक धुनों की तर्ज पर रचे गये व्यंग्य, जैसे –

तीनों बंदर बापू के
बापू के भी ताऊ निकले तीनों बंदर बापू के

या सन् 1954 में लिखे गये झंडा गीत का उदाहरण –

'दस हजार, दस लाख मरें, पर झंडा ऊँचा रहे हमारा।
कुछ हो, कांग्रेसी शासन का डण्डा ऊँचा रहे हमारा।

शासन के ऐसे जनप्रतिनिधियों का व्यंग्य चित्र नौटंकी की परिचित धुन और शब्दावली में इस प्रकार खींचा गया है –

लौटे हैं कल दिल्ली से टिकट मार के
खिले हैं दाने ज्यों अनार के
आये दिन बहार के।

नागार्जुन के व्यंग्य को उनका आत्म व्यंग्य और भी विश्वसनीय बनाता है। नागार्जुन जितने निर्मम औरों के प्रति हैं, उससे किसी तरह कम निर्मम अपने प्रति नहीं हैं। 'पछाड़ दिया मेरे अस्तित्व ने' शीर्षक कविता में बहुत दिनों के बाद गाँव में उगते सूरज को देखकर कहते हैं – 'सोते ही बिता देता हूँ शत-शत प्रभात/छूट सा गया है जनपदों का स्पर्श।' (हाय रे आंचलिक कथाकार) अंतिम पंक्ति का व्यंग्य आत्मग्लानि की भावुकता को और गहरा कर देता है।

नागार्जुन के यहाँ आपको गीत भी मिलेंगे, छंदों में लिखी गई कविताएँ भी, विभिन्न शैलियों में किये गये अनेकों प्रयोग भी। वस्तुतः नागार्जुन के काव्य का कोई एक रूप नहीं है। इस देश की भौगोलिक, सांस्कृतिक विभिन्नताओं की तरह ही उनके अनेकों काव्य रूप हैं। दोहे, गीत, छंदबद्ध कविता, मुक्तक और विभिन्न लोकधुनों पर रचे गये व्यंग्यों की उनके यहाँ भरमार है। छंदबद्ध कविता में कभी तो पूरी कविता में एक ही छंद और लय मिल जायेगी, कभी एक ही कविता में छंद बदल जायेगा किन्तु ये सारे काव्य रूप कविता को पाठक और जन-समुदाय तक सम्प्रेषित करने के लिए, अर्थ को उन तक सारगर्भित ढंग से पहुँचाने के लिए ही नागार्जुन इस्तेमाल करते हैं।

नागार्जुन की काव्य भाषा भी उनके काव्य रूप और शिल्प की तरह बहुत वैविध्यपूर्ण है। अरुण कमल के शब्दों में – 'नागार्जुन को पढ़ने का अर्थ है हिन्दी भाषा के वास्तविक जगत में लौटना, हिन्दी के निजी स्वरूप और संस्कारों से परिचित होना। भाषा के इतने रूप,

बोलियों के इतने 'मिक्सचर' उनकी कविताओं में मिलते हैं कि यदि उनके काव्य के अन्य प्रसंगों को छोड़ भी दें तो सिर्फ अपनी भाषा के लिये वे हमेशा-हमेशा के लिये महत्वपूर्ण बने रहेंगे। शब्दों को वे इस तरह फेंटते हैं, जैसे ताश के पत्ते। फेंट कर कहीं से काट लिया।, (आलोचना, अंक 55-56, पृ. 28) नागार्जुन की भाषा में बोलियों, संस्कृत, उर्दू, अंग्रेज़ी के अनेक शब्द आते हैं। ये वे शब्द हैं जो विभिन्न अंचलों में बोली जाने वाली खड़ी बोली में घुल-मिल गये हैं। इस अर्थ में उनकी भाषा बेहद लचीली और समावेशी है। उसके तल में बोलियों की सहस्रधारा का अन्तरप्रवाह मौजूद है। वह निरंतर विस्तृत और समृद्ध होती भाषा है। डॉ. रामविलास शर्मा ने बहुत सटीक शब्दों में नागार्जुन की काव्यभाषा की विशेषताओं को एक ही पंक्ति में बहुत संक्षेप में बता दिया है – 'हिन्दी भाषी प्रदेश के किसान और मजदूर जिस तरह की भाषा आसानी से समझते और बोलते हैं, उसका निखरा हुआ काव्यमय रूप नागार्जुन के यहाँ है'। भारतेंदु पर लिखी कविता में नागार्जुन ने स्वयं स्पष्ट कर दिया है – हिन्दी की है असली रीढ़ गवाँरू बोली।

बोध प्रश्न 2

1 'सिंदूर तिलकित भाल' और 'प्रत्यावर्तन' नागार्जुन की ये तीनों कविताएँ किस विषय को लेकर लिखी गयी हैं?

.....

2 नागार्जुन का प्रकृति-चित्रण अनुभव पर आधारित है, काल्पनिक नहीं, संक्षेप में टिप्पणी कीजिये।

.....

.....

.....

.....

.....

3 नागार्जुन ने अपनी कविताओं में किस काव्य रूप को अपनाया है और क्यों? संक्षेप में बताइये।

.....

.....

.....

.....

.....

4 नागार्जुन की काव्य भाषा कैसी है? संक्षेप में बताइये।

.....

.....

.....

.....

.....

26.6 काव्य-वाचन और संदर्भ सहित व्याख्या

यहाँ हम आपको काव्य पाठ के लिये नागार्जुन की दो कविताएँ "कालिदास" और "अकाल और उसके बाद" दे रहे हैं। हम आपको इन में से कुछ अंश लेकर व्याख्या करना भी सिखायेंगे। कुछ अंशों की व्याख्या आप करेंगे।

कालिदास

कालिदास, सच-सच बतलाना।
इंदुमती के मृत्यु शोक से
अज रोया या तुम रोये थे?
कालिदास, सच-सच बतलाना।

शिवजी की तीसरी आँख से
निकली हुई महाज्वाला में
धृतमिश्रित सूखी सामिधा-सम
कामदेव जब भस्म हो गया
रति का क्रंदन सुन आँसू से
तुमने ही तो दृग धोये थे?
कालिदास, सच-सच बतलाना
रति रोई या तुम रोये थे।

वर्षा ऋतु की स्निग्ध भूमिका
प्रथम दिवस आषाढ़ मास का
देख गगन में श्याम घन घटा
विधुर यक्ष का मन जब उचटा
खड़े-खड़े तब हाथ जोड़कर
चित्रकूट के सुभग शिखर पर
उस बेचारे ने भेजा था
जिनके ही द्वारा संदेशा
उन पुष्कशवर्त मेघों का
साथी बन कर उड़ने वाले
कालिदास, सच-सच बतलाना

परपीड़ा से पूर-पूर हो
थक-थक कर औ चूर-चूर हो
अमल-धवल गिरी के शिखरों पर
प्रियवर, तुम कब तक सोये थे?
रोया यक्ष कि तुम रोये थे?
कालिदास, संच-सच बतलाना।

(कालिदास को संबोधित इस कविता में कालिदास के काव्य की संवेदना से कवि नागार्जुन इतने प्रभावित हैं कि उन्हें लगता है इंदुमती के मृत्यु शोक पर अज नहीं कालिदास ही रो पड़े थे। अर्थात् कालिदास ने अपने काव्य में अज के शोक को जिस वेदना और गहरायी के साथ अभिव्यक्त किया है उससे यह आभास होता है कि कालिदास ने मानो अज की वेदना को स्वयं भोगा हो। आगे की पंक्तियों में कामदेव के भस्म होने पर उसकी पत्नी रति के क्रंदन, और यक्ष के विरहाकुल होने के बारे में कवि कालिदास से यही प्रश्न करता है कि इनकी वेदना की अभिव्यक्ति भी इतनी मार्मिक और जीवंत बन पड़ी है मानो कालिदास ने स्वयं रति की पीड़ा और यक्ष का विरह भोगा हो।)

"अकाल और उसके बाद"
कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त

दोनों आए घर के अंदर कई दिनों के बाद
धुआँ उठा आँगन से ऊपर कई दिनों के बाद
चमक उठीं घर भर की आँखें कई दिनों के बाद
कौए ने खुजलाई पाँखें कई दिनों के बाद

(यह कविता बिहार में पड़े उस अकाल के बारे में है जिसमें लाखों लोग मर गये थे। अकाल पड़ने पर खेती पर निर्भर लोगों की दशा कितनी दयनीय और खराब हो जाती है और अकाल के बाद कैसे उनके जीवन में आशा की किरण फूटती है – इसका वर्णन और चित्रण कवि नागार्जुन ने इस कविता में किया है।)

उद्धरण 1
कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त

संदर्भ: ये पंक्तियाँ नागार्जुन द्वारा लिखित कविता "अकाल और उसके बाद" नामक कविता से ली गयी हैं। सन् 1951, 52 में जो अकाल पड़ा था, उस पर नागार्जुन ने यह कविता लिखी है। नागार्जुन प्रगतिशील एवं जनकवि के रूप में जाने जाते हैं। उन्होंने देश की शोषित जनता के बारे में ही लिखा है। वास्तव में वे एक प्रतिबद्ध कवि हैं और उनकी प्रतिबद्धता शोषित, गरीब और दुःख झेल रही जनता के साथ है। इसलिये जनता पर जहाँ कहीं भी अत्याचार होते हैं, प्राकृतिक विपदाएँ आती हैं, नागार्जुन उनकी तकलीफों को, उनके दुःख-दर्दों को अपनी रचना के माध्यम से अभिव्यक्ति देते हैं। देश में जब अकाल पड़ा, तो इसका सबसे अधिक प्रभाव गरीब लोगों पर ही पड़ा, भूखों मरने की नौबत आ गयी। नागार्जुन ने अकाल के प्रभाव से पीड़ित गरीब लोगों की दयनीय स्थिति को अपनी इस कविता में अभिव्यक्ति दी है।

व्याख्या: कवि कहता है कि अकाल पड़ने पर कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की उदास रही, अर्थात् फसलें नष्ट हो गयीं, घरों में कई दिनों तक न तो अनाज पीसा गया और न ही चूल्हा जला। अर्थात् घर भर भूखा रहा। अगली पंक्ति में कवि कहता है कि कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास। अर्थात् चक्की और चूल्हा इंसानों के काम की वस्तुएँ नहीं रह गयीं। खाना न मिलने से घर के सारे काम ठप्प पड़ गये। दीवारों पर छिपकलियाँ घूमने लगीं और चूहों को भी खाने को अनाज का एक भी दाना नहीं मिला।

विशेष: चारों पंक्तियों में शाब्दिक लय है और "कई दिनों तक" की आवृति समय बोध को और गहरा करती है और इस एहसास को पुख्ता करती है कि अकाल का समय कितना भयानक एवं दारूण होता है।

- चूल्हे का रोना और चक्की के उदास होने में कवि ने चूल्हे और चक्की का मानवीयकरण कर दिया है।
- चूल्हा, चक्की, कानी कुतिया, छिपकलियाँ और चूहे गाँव के गरीब परिवार का वातावरण बनाते हैं।

अभ्यास: यहाँ हम आपको एक और काव्यांश दे रहे हैं, इसकी व्याख्या करने का प्रयास आप स्वयं करें।

उद्धरण 2
दाने आये घर के अंदर कई दिनों के बाद
धुआँ उठा आँगन से ऊपर कई दिनों के बाद
चमक उठी घर भर की आँखे कई दिनों के बाद
कौए ने खुजलाई पाँखें कई दिनों के बाद

प्रसंग: ये पंक्तियाँ नागार्जुन द्वारा लिखित कविता "अकाल और उसके बाद" नामक कविता से ली गयी हैं। जब अकाल का असर दूर हुआ, तब घरों में जीवन शुरू हुआ।

व्याख्या:

.....
.....
.....
.....
.....
.....

26.7 सारांश

नागार्जुन आजादी से पूर्व से रचनाकर्म में संलग्न हैं। उन्होंने काव्य रचना के साथ-साथ उपन्यास भी लिखे हैं। प्रकृति से वे घुमक्कड़ और यायावर हैं। उन्होंने लगभग सारे देश का भ्रमण किया है। उन्होंने मैथिली में लिखना शुरू किया था किन्तु बाद में वे हिंदी में लिखने लगे। किसी भी राजनीतिक विचारधारा का हूबहू अनुकरण न करते हुए भी उनकी प्रतिबद्धता व्यापक रूप से मार्क्सवादी विचारधारा में है क्योंकि यह विचारधारा वर्गाधारित समाज में उनका पक्ष लेती है जो शोषित हैं। इसलिये नागार्जुन ने राजनीतिक कविताओं में

सत्ताधारी, शोषण में लिप्त एवं अपने लाभ के लिये गरीबों का खून चूसने वाले नेताओं, को अपने व्यंग्य का निशाना बनाया है। चरमराती सामंती व्यवस्था के अवशेष – जमींदार, सामंत, बड़े-बड़े ताल्लुकेदार एवं नवाब भी उनके व्यंग्य का निशाना बने हैं। नागार्जुन की ऐतिहासिक चेतना और सामाजिक यथार्थ को परखने की दृष्टि बहुत पैनी है। वे किसानों, मजदूरों का पक्ष तो लेते हैं किन्तु उनके जीवन के अन्तर्विरोधों को भी नजरदांज नहीं करते। सामाजिक अन्तर्विरोधों को उघाड़ती उनकी कविताओं में मध्यवर्ग एवं बुद्धिजीवी वर्ग भी शामिल है। नागार्जुन ने भारतीय नेताओं एवं अन्तर्राष्ट्रीय नेताओं तथा अपने मित्रों को भी अपनी कविताओं में याद किया है। इसके अलावा प्रकृति पर नागार्जुन ने बहुत कविताएँ लिखी हैं। प्रकृति में उन्हें बादल एवं वर्षा बहुत प्रिय हैं क्योंकि बादल ही किसान के जीवन की आस है। पत्नी, पुत्र, मित्र अर्थात् निजी संबंधों पर भी उन्होंने लिखा है।

नागार्जुन की कविता के अनेकों काव्य रूप हैं। उन्होंने कई-कई छंदों, शैलियों में लिखा है। उनके शिल्प की सबसे बड़ी खूबी व्यंग्य है। उनकी काव्य भाषा इतनी संप्रेषणीय है कि रामविलास शर्मा का यह कथन कि उनकी भाषा वही भाषा है जो किसान-मजदूरों की समझ में आती है, अक्षरशः सार्थक है। वस्तुतः नागार्जुन सही अर्थों में जनकवि हैं।

26.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

अजय तिवारी, नागार्जुन और उनकी कविता।

26.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1 सतरंगे पंखों वाली, प्रेत का बयान, चना जोर गरम, तालाब की मछलियाँ

2 उपन्यास, कहानी, निबंध, अनुवाद

3 तालाब की मछलियाँ

4 क) सरकार और शोषण तंत्र के भागीदारों के खिलाफ
ख) मेहनतकश संघर्षरत जनता के पक्ष में

5 नागार्जुन की कविताएँ किसी भी राजनीतिक विचारधारा का अनुसरण करते हुए नहीं चलती हैं। जिस विचारधारा को वे सही मानते हैं यदि वो विचारधारा भी जनता के विरोध में जाने लगे तो वे सीना तान कर उसका भी विरोध करते हैं। अर्थात् उनकी कविताएँ इस कॉमनसेंस पर आधारित हैं कि जनता और शोषण को दूर करने के लिये किए गए जनसंघर्षों का जो भी विचारधारा साथ देती है, वे उसी के साथ होते हैं। इसीलिये जब बिहार में जयप्रकाश नारायण का आंदोलन एक व्यापक जनआंदोलन में बदल गया तब नागार्जुन ने उसका पक्ष लिया।

6 मार्क्सवादी

7 वियतनाम

बोध प्रश्न 2

1 ये दोनों कविताएँ पति-पत्नी संबंधों को लेकर लिखी गयी हैं।

2 नागार्जुन यायावर हैं, घुमक्कड़ हैं – उन्होंने लगभग सारा देश घूमा है। इसलिये उनका प्रकृति चित्रण भी उनके अपने अनुभवों पर आधारित है। जैसे "बादल को घिरते देखा है" कविता में वे हिमालय पर्वत पर फिरते हुए बादलों का ही चित्रण नहीं करते बल्कि हिमालय की घाटी की वनस्पति, वहाँ के लोगों के ब्यौरे भी देते चलते हैं। अर्थात् नागार्जुन अपने अनुभवों को ही कविता में ढाल कर प्रस्तुत करते हैं।

3 नागार्जुन की कविताओं का कोई प्रमुख काव्य रूप नहीं है। उनके यहाँ विभिन्न काव्य रूप मिलते हैं। गीत, मुक्तक, लम्बी कविताएँ, छंदों बद्ध कविताएँ अर्थात् वे किसी एक काव्यरूप में बंध कर नहीं लिखते। इसलिए छंदोबद्ध कविता में वे अपनी इच्छा से छंद

बदल सकते हैं, एक ही कविता कई-कई छंदों में हो सकती है। वास्तव में नागार्जुन की कविताओं के काव्य रूप वैविध्यमय हैं।

4 नागार्जुन की काव्यभाषा सरल, सहज और ऐसी संप्रेषणीय भाषा है जो आम जनता की समझ में आ जाए। उनकी भाषा में कई बोलियों के, अंग्रेज़ी, संस्कृत और हिंदी के शब्द गुंथे हुए हैं। वास्तव में यह मजदूरों, किसानों की समझ में आने वाली भाषा है।

शब्दावली

वामपंथी दल: आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों में मेहनत करने वालों का समर्थन करने वाले राजनीतिक दल, जो पूँजी पर कुछ व्यक्तियों के अधिकार के विरोधी होते हैं।

सविनय अवज्ञा आंदोलन: गाँधी जी द्वारा 1930 में चलाया गया आंदोलन।

लगान बंदी आंदोलन: 1930 के आंदोलन के दौरान देश के कुछ प्रांतों में जैसे संयुक्त प्रांत और गुजरात में किसानों ने जमींदारों को लगान देना बंद कर दिया था।

किसान सभा: 1936 में स्थापित किसानों का अखिल भारतीय संगठन।

बंगाल का अकाल: 1943 में पड़ा बंगाल का प्रसिद्ध अकाल जिसमें लाखों लोग मारे गये थे।

नौ सेना विद्रोह: 1946 में बंबई में भारतीय नौ सेना के सैनिकों ने अंग्रेज़ी शासन के विरुद्ध विद्रोह किया था – यही इतिहास में नौ सेना विद्रोह कहलाता है।

अभिधा: शब्द का वह अर्थ जो कोश के अनुसार हो, उसे वाच्यार्थ कहते है और शब्द की शक्ति को अभिधा कहते हैं।

जीवनासक्ति: जीवन के प्रति आसक्ति।

आदर्शवाद: जीवन और जगत को देखने की भाववादी दृष्टि। हिंदी साहित्य में आदर्शवाद यथार्थवाद की विरोधी विचारधारा भी मानी जाती है। यहाँ जीवन के यथार्थ की बजाए आदर्श रूप पर बल दिया जाता है।

यथार्थवाद: जीवन की वास्तविकता को उसके पूरे परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने वाली विचारधारा।

कालातीत: काल से परे

विपुल: बहुत

सामाजिक विषमता: समाज के विभिन्न समुदायों में आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आधार पर जो अंतर होता है उसे ही सामाजिक विषमता कहते हैं।

अगस्त्य: हिंदू पौराणिक ऋषि जिनके बारे में माना जाता है कि उन्होंने एक ही घूंट में सारा समुद्र पी लिया था।।

पांडुर: पीला

मनहर: मनोहर

यथास्थितिवादी: जो परिवर्तन का विरोधी हो।

स्वेच्छाचारी: जो सामाजिक नियमों, आचारों को न मानता हो और अपने मन के अनुसार कार्य करता हो।

वांछित: जो स्वीकार्य हो।

ऐन्द्रिक क्षमता: इंद्रियों द्वारा ग्रहण करने की क्षमता।

कपिश: हनुमान

ज्योत्स्ना: चाँदनी

कदली: केला

अकुण्ठ: बिना कुण्ठा के।

आत्मभर्त्सना: अपनी आलोचना करना

बुर्जुआ नीतिः पूँजीवाद की पक्षधर नीति

समाजवादी व्यवस्थाः ऐसी व्यवस्था जिसमें पूँजी पर समाज का अधिकार हो।

साम्राज्यवादी शक्तियाँ: वे देश जो राजनीतिक, आर्थिक या भौगोलिक दृष्टि से दूसरे देशों पर अपना प्रभुत्व स्थापित करते हों।

पूँजीवादी शक्तियाँ: वे देश जो पूँजी पर समाज के आधिपत्य के खिलाफ हों। तथा जहाँ पर पूँजी पर व्यक्तिगत अधिकार की मान्यता प्राप्त हो।

त्याज्यः त्यागा हुआ

स्वकीया प्रेमः अपनी पत्नी से प्रेम

परकीय प्रेमः पत्नी के अतिरिक्त किसी अन्य स्त्री से प्रेम करना

अवनीः धरती

वन्याः वन की

पुष्करिणीः छोटे तालाब